मैं नीरज गर्ग सन् 1987 में एम.ए.करने के बाद 1989 में अपनी स्वयं की रेडिमेंड कपड़ो की दुकान खोली, मेरी दुकान के सामने की दुकान में दो लोग स्मैक पीते थे तब तक मैं उस बारें में नहीं जानता था । धीरे–धीरे मैं स्मैक पीना सीख गया और इस लत में बुरी तरह फंस गया। मैं सब तरफ से परेशान हो गया तब मेरे ताऊजी मुझे भोपाल इलाज के लिए लेकर आए । उन्होंने पहले ही ''नवजीवन'' नशाामुक्ति केन्द्र में बात की थी । यहां लाकर मुझे आदरणीय भार्गव साहब से मिलवाया । उन्होंने बताया कि 15 दिन हमारे साथ रहना है । इस प्रकार ठीक होने के बाद मैं यहां से गया नहीं । रोज सुबह भाई यहां छोड़ता और शाम को लेकर जाता । कुछ समय के बाद मैं यही पर काम करने लगा । यहां पर मेरी शादी हुई । फिर कुछ समय बाद सन् 1999 में मैं फिर से नशा करने लगा, जिस दौरान मैं घर, परिवार सभी से अलग हो गया । मेरे रहने , खाने का ठिकाना नहीं रहा, जब बहुत परेशान हो गया तब एक दिन मैं फिर आ. भार्गव सा. से मिला उनको अपनी परेशानियां बताई तब उन्होंने मेरा इलाज कराया, और अपने पास ही रखा, फिर धीरे–धीरे करके परिवार से सुलह हो गई पत्नी, बच्चे सभी साथ रहने लगे और आज मैं फिर से नौकरी करके अपना जीवन नशामुक्त व्यतीत कर रहा हूँ । अभी मैं 2004 से ठीक प्रकार से चल रहा हूँ । आगे भी शायद ऐसा बना रहेगा ।

धन्यवाद,

11.7.2008 नीरज गर्ग